कोमल हो कमजोर नहीं

समर्थ नारी गौरव

कीर्ति प्रदीप वर्मा

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कोमल हो कमजोर नहीं

कीर्ति प्रदीप वर्मा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-90995-14-1

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - कीर्ति प्रदीप वर्मा 2021
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY KIRTI PRADEEP VERMA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

कोमल हो कमजोर नहीं

भारत देश एक ऐसा देश है जहां पत्थर भी पूजा जाता है फिर शक्ति यानी जगत जननी माँ जिनकी पूजा अर्चना समस्त जगत करता है। शक्ति की आराधना पुरुष वर्ग अत्यधिक करते देखे गए हैं।

जहां छोटी कन्याओं को देवी के रूप में पूजा जाता है, भोजन कराया जाता है और सुहागन को महागौरी के रूप में पूजा जाता है परंतु क्या सच में नारी को वह सम्मान मिल पाता है जो जगत जननी को मिलता है?

पुरुष प्रधान समाज में पुरातन काल से ही नारी को दोयम दर्जा दिया गया है हमारे सभी धार्मिक ग्रंथ पुरुषों द्वारा लिखे गए हैं, कोई एक भी ग्रंथ मुझे याद नहीं आता कि नारी शक्ति द्वारा लिखा गया हो!!

चारों युगों में सिर्फ भगवान भोलेनाथ ही एक अपवाद है जिन्होंने सदैव शक्ति को उसके सामर्थ्य का एहसास कराया। स्वयं जगकर्ता और जगहर्ता होते हुए भी माता गौरा को समस्त देवों की शक्तियों से युक्त कर दानवों के संहार के लिए प्रेरित किया, त्रेता में तो नारी को ही सदैव अग्नि परीक्षा देनी पड़ी।

जहां तक कलयुग में प्रत्येक क्षेत्र में आधी आबादी सदैव दोयम दर्जे पर ही रही है, नहीं तो आरक्षण की आवश्यकता ही क्यों होती? नारी सशक्तिकरण की आवश्यकता क्यों पड़ी?

चाहे राजनीति हो फिल्म उद्योग हो या उद्योग जगत हो सभी जगह महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा बहुत पीछे हैं बड़े बड़े उद्योगों में मात्र 27% महिला है जो बड़े-बड़े पदों पर हैं और तो और साहित्य जगत में ही कवि सम्मेलनों में दस कवियों के बीच मात्र एक या दो कवयित्रियां होती हैं। अगर कोई महिला साहित्यकार बगैर किसी की सहायता के आगे बढ़ती है तो यह पुरुष प्रधान समाज से को हजम नहीं होती।

आप और हम सभी बुद्धिजीवी शिक्षित समाज के सदस्य हैं जहाँ नारी को उचित सम्मान दिया जाता है, और हम यह समझने लगते है कि नारी पुरुषों के बराबर है, परंतु भारत की सत्तर प्रतिशत महिलाएं आज भी अवहेलना की शिकार हैं। अनेक उच्चशिक्षित परिवारों में देखा गया है की महिलाओं को अपनी राय देने या बिना पुरुषों की बैसाखी के चलने का अधिकार नहीं है।

माना कि नारी और पुरुष दोनों समाज रूपी रथ के दो पहिए हैं परंतु महिलाओं के साथ आए दिन हो रहे व्यभिचार,

अपहरण बलात्कार, घरेलू हिंसा आदि की घटनाएं आम बात है। जहां महिलाएं सशक्त होने का दावा करती हैं वहीं दिल्ली की गुरमेहर जैसी युवतियों को खुलकर अपनी बात कहने के जुर्म में दबा दिया जाता है।

एक और "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते तत्र रमंते देवता का नारा दिया जाता है" और दूसरी ओर निर्भया जैसे कांड आए दिन होते हैं यहां तक की बेटी के जन्म को भी स्वीकार नहीं किया जाता, बल्कि अपनी कोख में पल रही संतान को जन्म देना है या नही यह भी उसकी इच्छा पर निर्भर नही।

आम परिवारों में बेटों को अधिक महत्व दिया जाता है जबकि उच्च शिक्षित बहू को भी बेटे के बराबरी का सम्मान नहीं मिल पाता। जिसके लिए नारी भी कहीं न कहीं दोषी है। तो फिर शक्ति की पूजा आराधना का ढकोसला क्यों किया जाता है? इंतजार है उस समय का जब नारी को पैर के जूती न समझ सर का ताज समझा जाएगा।

इस मुकाम तक पहुंचने के लिए नारी को स्वयं सक्षम बनना होगा। आवश्यकता नारी सशक्तिकरण कि नहीं क्योंकि नारी स्वयं में सशक्त है जो नारी पुरुष जाति को जन्म दे सकती है.. सृष्टि को आगे बढ़ा सकती है ..

वह नारी कमजोर तो हो ही नहीं सकती, हां उसे सक्षम होना होगा ताकि वह अपने अस्तित्व को पहचानना होगा। आधुनिक युग मे बढ़ती हुई महंगाई एवं अति महत्वाकांक्षाओं के चलते पति पत्नी दोनों का सहयोग अति आवश्यक है।

पति कितनी भी बड़ी नौकरी करें खर्चे भी उतने ही अधिक होते हैं, महानगरों में उत्तम जीवन जीने के लिए पत्नी का भी आय में सहयोग हो तो जीवन और उत्तम हो सकता है। अनेक पति-पत्नी नौकरी पर जाते हैं, पर कई महिलाएं जो कारणवश नौकरी नहीं कर सकती वे घर बैठे ही अपनी रुचि एवं सामर्थ अनुसार कोई न कोई व्यापार अवश्य कर सकती हैं।

आवश्यक नहीं व्यापार बहुत बड़ा हो, छोटे से छोटे रूप में भी आमदनी का जरिया हो सकता है। कई महिलाएं समय की कमी का रोना रोती हैं, घर के काम का कोई अंत नहीं होता दृढ़ संकल्प करें तो घर के काम के साथ साथ अनेक कार्य किये जा सकते हैं। इसके लिए बड़ी-बड़ी डिग्रियों की आवश्यक् नही है, कम पढ़ी लिखी महिलाएं -

- कला के क्षेत्र में सिलाई, कढ़ाई, बुनाई पेंटिंग, ब्यूटी पार्लर, हस्तकला इत्यादि कामों में कार्यों को कर घर बैठे कमा सकती हैं।
- जो शिक्षित हैं वे कोचिंग क्लासेस आदि ले सकती हैं।
- पाक कला में रुचि रखने वाली महिलाएं बेकिंग, कुकिंग, चॉकलेट मेकिंग, आइसक्रीम आदि क्लासेस भी चला सकती हैं और बाहर के आर्डर भी ले सकतीं हैं।
- महानगरों में झूला घर की अति आवश्यकता होती है और अनेक महिलाएं इससे भी अच्छी खासी आय प्राप्त कर अपने परिवार को खुशहाल रखने में मदद कर सकतीं हैं।
- संगीत में रुचि रखने वाली महिलाएँ भी संगीत सिखा कर आय प्राप्त कर सकतीं है।
- आज इंटरनेट के युग में नेट के जरिए अनेक कार्य किए जा सकते हैं जैसे ऑनलाइन व्यापार, लेखन, प्रकाशन आदि।

आज की महिला कहीं भी किसी से पीछे नहीं है वह पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं और परिवार को चलाने में मदद कर रही है।

बाहर के कार्य जैसे बैंक आदि बैंक बच्चों के स्कूल बाजार के काम आदि जिम्मेदारियां उठाना आना चाहिए। नारी को सिर्फ एक सजावटी सामान बन कर नहीं बल्कि गृहस्थी की गाड़ी का बराबरी का पहिया बनकर कार्य करना चाहिए और इसके लिए उसे बाहर की दुनिया में कदम रखना होगा उसे समझना होगा। अच्छे बुरे का ज्ञान बहुत ही आवश्यक है बुरे वक्त के लिए आत्म सुरक्षा के गुर भी सीखना अति आवश्यक है और सबसे जरूरी बात कि परिवार में नारी प्रत्येक नारी का सम्मान करे और बचपन से ही लड़कों को नारी का सम्मान करना सिखाए तो वह दिन दूर नहीं जब बीते युग की तरह आज भी मनुस्मृति के वचन चरितार्थ होंगे-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।

कीर्ति प्रदीप वर्मा

नारी

नारी तुम केवल नारी हो
पुरुषों को जन्म दिया करो!
वक्षामृत से सिंचित कर
वंश बेल को बड़ा करो।
कोमल बना प्रकृति ने
तुम से भेदभाव किया!
पुरुषों के रंग मंच पर तुम
कठपुतली बन रहा करो।
व्रत उपवास रखो नारी
पुरुषों की उम्र बढ़ाने को
पर तेरा कोई मोल नही
तुम तो प्रेम ही प्रेम करो!
पुरुषों के नक्काल खाने मे
ऊंची न तुम आवाज़ करो!
चुपचाप सहो, बस मौन रहो
उनके ही हाथों लुटा करो।
नारी तुम केवल नारी हो
पुरुषों को जन्म दिया करो!!

श्रद्धांजलि

दे दी थी

श्रद्धांजलि!

अपने अस्तित्व को,

जिस दिन

एक खूंटे से

दूसरे खूंटे पर

बाँध दी गई थी,

और बदल दिया गया

मेरा नाम, उपनाम

और पहचान।

बांध कर रख दी थी

एक पोटली

जिसमे थोड़ा बचपन

थोड़ा चुलबुलापन

और कुछ अल्हड़पन।

बस ले आयी

पल्लू मे बँधी गाँठ

जो माँ ने लगाई थी

विदाई के वक्त

और याद रही

वो हिदायत,

बेटी

कभी मौका मत देना

शिकायत का,

और मै भी

जीती रही

बँधुआ की तरह

दूसरों की खुशियों

के लिये।

अस्तित्व

खोजती हूं अपना
अस्तित्व!!!!
क्या है मेरा वजूद?
कुछ भी तो नहीं!!
मैं खोजती हूं!
माँ की ममता में...
जो गिनती है दिन
मेरे मायके आने के,
पिता के दुलार मे...
जो लाते हैं हर वो चीज
जो मुझे पसंद थी,
भाई की मनुहार में...
जो तकता हैं राह
सावन के आने की
बच्चों की पुकार में...

जो खोजते हैं मुझे
स्कूल से आने पर,
पति के प्यार में...
जिन्हें
घर खाने दौड़ता है
मेरे बगैर,
अँगना की बगिया
अंबुआ की चिड़िया
द्वारे की गइया
सब उदास है
मेरे बगैर...
हाँ!!
बहुत विराट है
मेरा अस्तित्व!!

विश्वास है यह मुझको

बचपन की गलियाँ छोड़
सखियों से लिया मुख मोड़
किया गृह प्रवेश
नया-नया परिवेश।
नाज नखरे
रूठना मनाना
हँसना-खिलखिलाना
विस्मृत हो चले,
बस मानना आदेश।
चुनरी के नए रंग
जीने के नये नए ढंग!
जिसने भी जो कहा
चुपचाप ही सहा!
जिन सब्जियों पर कभी
तूफान थी मचाती,
अब नजरें नीची करके
चुपचाप सब है खाती
घर भर को जब खिलाती
खुदअंत मे ही खाती।
कुछ कह भी न पाती

बस हाँ में हाँ मिलाती!
कहते हैं सभी लोग
बदल गई हूं मैं !!
वक्त के सांचे में
ढल गई हूं मैं !!
सोचा कभी किसी ने!!
क्या-क्या दफन किया है?
कामनाओं को कितनी
मैंने कफन दिया है?
कर्तव्य पथ पर चलके
सब फर्ज़ पूरे करके
अब जीना चाहती हूँ
पाकर गरल
मैं अमृत पीना चाहती हूँ
तुम जो साथ दोगे
पा जाऊंगी मैं खुद को
सर्वस्व बदली हूँ मैं,
तुम भी तो बदलो खुद को!!
भरोसा ही नही है
विश्वास है ये मुझको।
विश्वास है ये मुझको।

सुनहरे पल

घर भी है कुछ खिला खिला
प्यार के रंग में घुला मिला।
कोने जो चुप बैठे थे
जो सूने सूने रहते थे।
कमरे भी गाने गाते हैं
पास हमें जब पाते हैं।
पौधे गमलों के नाच रहे
छत पर खुशियां बांट रहे।
कली कली आबाद हुई
बड़ी मुद्दत के बाद हुई।
बर्तन करते हैं बातें
स्पर्श मालकिन का पाते।
हुए झकाझक कपड़े
जो बाई ने करे कड़े।
बच्चों की फरमाइश पर
नये नये व्यंजन बनते तर।
अब लगता इंसान हैं हम
मिलता न था, दो पल दम।
भूली बिसरी बात करें
अपनों को हम याद करें।
कोरोना का शुक्रिया!!
जो पहियों को बंद किया।
श्वास प्रकृति ले रही
तुझको दुआयें दे रही।

कीर्ति प्रदीप वर्मा

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

कीर्ति प्रदीप वर्मा

मौन

अपना अस्तित्व स्वीकार करो!!
मत मौन रहो हुंकार भरो!!

शिला नही तू बनी रहे
दोष नहीं जब तेरा हो?

राह तको न किसी राम की !!
रावण का प्रतिकार करो!!!

अपना अस्तित्व स्वीकार करो– – –

वस्तु नहीं हो जो लगो दाव पर,
ऐसे पति का बहिष्कार करो!!

लाज बचाओ खुद अपनी
कृष्ण का न इंतजार करो!!

अपना अस्तित्व स्वीकार करो– – –

कोमल हो कमजोर नहीं
सृष्टि का आधार तू ही,
अब और न तुम तिरस्कार सहो!

अपना अस्तित्व स्वीकार करो– – –

सीता मरियम और फातिमा!!
रणचंडी बन संहार करो!

ष्मृत्युष भी तो नारी है
सारी सृष्टि पर भारी है!!!

अस्तित्व अपना पहचानो
मत मौन रहो हुंकार भरो!!

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं संस्था – 9424765259

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

मूल्य 50/–

978-93-90995-14-1